उगीरन् । विदिल्लीभे सन् मक्नभः ॥ येगी इत्य यगभभुवाय यगे छिपउय गैविता गारिकलीभ सन्य अन्तनभः ॥ भीराभ्रा ग्रंथीउवलच्ये गिविनाचा । रिलिभ भन्त्य यसंगादालन्भः ॥भन्भनिध्वग्य भने भनिद्यानुय भवभनिद्धन भग्रे गेविद्यय। निद्रली- मन्य यहाथवीउनभः ।। विश्व श्र ाय विद्वभक्षय विद्वाधि।उसगविद्या। विकिल्मि सक्य गहेनभः॥भवश्य भव भभवाय भवा विधाउँ गीविकाय विकिली मस्य मद्भागः भृथानभः ॥ उत्रभाउकारा न्ध्रेश् । अच इन्यन्भः। प्रम् यम्यन्भः पश्चिमावमण्य । भेडर । जवग्यां इर्थन्य मिनुभानाय कमदाय रागभन्य पिर्भन य नारायाच्य भर्द्ध मधाय भर्द्धय यभना ये नके रक्षणामा क्षेणा वाश्ववयं कानाय य भन्भभावण्य भन्नक्य। धारमञ्जू यानायगाय माध्य म्यमारं भिष्टे भ त्रष्टा मिण्ये भाभ्य द्वार एर् प्रदेश

यमिम्य हलहरूय रिक्ट हवार वार्य प्रवाय भारक प्रवारये वन चय नम्पूर्य भाराये मे चय मारिकारो पद्भास मध्ये तिहरू भ ल्याय विविभार । लोपनाय भेभनाय यक य भिगाएं है। प्रयामन्य भाषा एहे न्सभ्या मन्य। इगवायाश्व प्रवास । इ। देव के मह वसम्वय वन्ध्य नरम्थय वम क्य ॥ ननक्य वन्भन्य मेग्य वेज्ञ ४०० ४ र्मभ्य व सम्वय हथीक मय भणवय भए अम्प्रमाय प्रापेषराय प्रमान क्य क्षिक्य गहन्स्य गेषिक्य मुम्य नुसूच नुस् तिथाय ग्रमिक्यो बल उर्य दिए सक्सम भडभूनम् सीराक्षण्य क्रवकाननान्य गिद लिभाक्षायम्य महिन्भः भूष्तिभः॥॥ प्रज्ञाचरय यदाभेक्ष वाय यदा पिथाय गिवि क्या रेदिलीं मक्य प्रथनभः ॥ निर्हेट निरम्भवय निरुपिपाय गेविकया वि हिली मस्य म्इपीयनभः॥ समस्मार ब्राय भमन्मिषण्य भमनुष्विधारय गेवि

SK2 No

ग्राय शिक्ष्मी सन्त्य प्रथमन्त्रभः॥ मिद्रा भाग मिलन कर विजेश्वर्य गिवक्य । गिर् ली भ पद्ध्य मुम्भनीयनभः॥ जिलकी नरायाय लक्जीभक्षय लक्किपिशं जित्रीय किलाय । रेडिली पर्णय मस य दिक्षिण्ये।। भवक्षाय ठ्राभक्ष्य र क्रिक्रिय गीविक्य नव्हेन्भः। गैकिली प्रम्य नेब्ह्नभः ॥ भए इन्ध्रभ्य भए द्भने विभाग भक्ष द्भन भक्ष विचय। ्रित्लियुर्धमक्ये स्मिभ्ध्रेगोद्धलन्मः॥ विषयज्ञाच व्यक्षिक्यं च्याधिभउय ग धिनाय थर्ड मयनयनभः॥ जिद्धभभीय सेर्भधीयया। रिअवयहाडिभग्डि विष्ठः भग्येविभ ३ विवास प्रवायवि १ रिगाउँ १ निमकाय १ च्याक्लयि नेदिलीयहार्यणीमित उन्नेयनुः ध्रीयया ३ मुद्रायः प्रमेन सा ज्ञान्त्री राज्ञा प्रानिभा प्राक्रिंग्रादिष र सीरोध्र भेलाने जिद्रालीया अन्य भूलाने भित्रिम्मिभगुन्छ ॥ उद्वेपर ॥

